स्कूल खुलने के शुरुआती सप्ताहों में शैक्षिक क्रियाएं

(प्राथमिक स्तर के लिए)

10 फरवरी, 2021

(यह पर्चा शैक्षिक पहलुओं पर केंद्रित हैं – स्वास्थ्य व स्वच्छता संबंधी सुझाव इसमें शामिल नहीं हैं)

आवश्यकता और उद्देश्य

कोरोना महामारी के कई दुष्प्रभाव प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप में देखे जा सकते हैं – आर्थिक, सामजिक, भावनात्मक, शारीरिक, मानसिक और शैक्षिक। प्राथमिक स्तर के बच्चों पर तो इसका और भी बुरा असर हुआ है। पिछले 10 माह से उनकी पूरी दुनिया अपने घर और उसके इर्द-गिर्द सिमट के रह गयी है। इस अवधि में वे अपने स्वाभाविक क्रियाओं से तो वंचित रहे ही हैं, उनका सीखना-सिखाना और भी बुरी तरह से प्रभावित हुआ है।

अपने देश में विगत शैक्षिक सत्र मे फाउंडेशनल लर्निंग पर अधिक जोर दिया जा रहा है- यानि कि बच्चों के शैक्षिक जीवन के पहले 3 साल में सीखने के आधार को इस तरह मजबूत करना कि आगे उनका सीखना सहज गति और पूरी क्षमता से होता रहे। पर क्या आप कल्पना कर पाते हैं कि जो बच्चे इस स्टेज में हैं, उनके लिए इन 3 सालों में से लगभग 1 साल तो ऐसे ही चला गया, यानि उनके शुरुआती शैक्षिक जीवन काल का एक-तिहाई!

दूसरी ओर देखें तो उत्तर-प्रदेश द्वारा मिशन प्रेरणा की शुरुआत इसी शैक्षिक-सत्र से हुयी है। साथ ही, राज्य द्वारा कुछ नई प्रकार की पाठ्य-सामग्री, पुस्तकालय आदि पर भी कार्य शुरू होना था। ऐसे में इस मुहिम को जो स्वरूप और गति मिलनी थी, वह स्कूल बंदी के कारण पूरी तरह से संभव नहीं हो पाया।

ऐसे में अगर हम प्राथमिक कक्षाओं के बच्चों को देखें तो निम्न स्थितियाँ पाते हैं;

- **कक्षा - 1:** स्कूली शिक्षा की पहली बार शुरुआत करने जा रहे हैं, पर एक भी दिन स्कूल नहीं गए।
- **कक्षा - 2**: स्कूली शिक्षा का दूसरा ही वर्ष लेकिन पहले वर्ष का समापन महामारी की आशंकाओं और डर के बीच हुआ।
- **कक्षा -3 और 4:** स्कूल बंदी के कारण लर्निंग गैप जबकि अगली कक्षा के कोर्स के लिए कम समय।
- **कक्षा - 5:** स्कूल बंदी के कारण लर्निंग गैप जबकि कुछ माह बाद ही अगले सत्र से उच्च प्राथमिक की शुरुआत करेंगे।

ऐसी ही स्थितियाँ शिक्षकों और अन्य शैक्षिक अभिकर्मियों की भी हैं;

- इस सत्र में कोई प्रत्यक्ष प्रशिक्षण या कार्यशाला में भगीदारी नहीं।

- नव नियुक्त शिक्षकों और अन्य शैक्षिक अभिकर्मियों के लिए प्रत्यक्ष ओरीएन्टेशन नहीं।
- प्रधानाध्यापकों के साथ या संकुल स्तर पर प्रत्यक्ष प्रगति बैठक की निरन्तरता नहीं।
- सभी बच्चों की पहुँच में फोन न होने से अनलाइन रूप से भी सभी बच्चों से जुड़ाव नहीं।

ऐसे में क्या किया जाए कि शिक्षक और बच्चे बिना कोई दबाव महसूस किए उपलब्ध समय में सीखने-सिखाने के कार्य को तेजी से आगे बढ़ाएं और उसे जोश और उत्साह के साथ जारी रखें?

इग्नस पहल द्वारा यह पर्चा इसीलिए तैयार किया गया है। इस पर्चे को पढ़-समझकर स्कूल खुलने के शुरुआती दिनों में प्राथमिक कक्षाओं के साथ इस तरह की गतिविधियों का आयोजन किए जाने में मदद मिलेगी जिससे कि बच्चे अपनी उम्र और कक्षा के अनुसार सीखने की क्रियाओं को आगे बढ़ा पाएं।

क्या और कैसे ?

ज़रूरत है - संवेदनशीलता, सहानुभूति, और बच्चों को कक्षा में होने वाली प्रक्रियाओं में जोड़ने की!

इसके लिए तीन चरण में क्रमिक रूप से नियोजित गतिविधियों का आयोजन और संचालन करना ठीक होगा-

- चरण 1 – शुरुआती कदम
- चरण 2 – पुनरावृत्ति चरण
- चरण 3 – स्वयं सीखने के लिए तैयार करना

चरण 1 - शुरुआती कदम

स्कूल खुलने के बाद शुरुआती दिनों में लिए जा सकने वाले कुछ कदम इस प्रकार हैं –

1. बच्चों के **अनुभवों और भावनाओं को सुनें**, उन्हें मौके दें कि वे इस साल हुए अपने अनुभवों और भावनाओं को कक्षा में साथियों के साथ साझा करें। उनके साथ **मिलकर योजना बनाएं** की स्वास्थ्य के लिए नियम और प्रोटोकॉल का पालन किस प्रकार किया जाए।
2. बच्चों की **इस साल की क्रियाओं और गतिविधियों के बारे में जानें** - बच्चों से पता करें कि इस साल जब वे स्कूल नहीं आए तब उन्होंने क्या-क्या किया। उनके यह अनुभव उनके ज्ञान कौशल का हिस्सा बन चुके हैं और आगे की प्रक्रियाओं में आप इनका उपयोग कर सकेंगे।
3. बच्चों के सामाजिक और भावनात्मक पहलुओं पर काम कर पाने के लिये उनके **परिवारों से संपर्क में रहें**।
4. **शिक्षण विधि में बच्चों की भूमिका** - बच्चों से बात करिए कि आप कक्षा में उनकी क्या भूमिका होने जा रही है, विशेष तौर पर इसलिए क्योंकि आप अलग-अलग प्रकार की गतिविधियां करवाएंगे - वे उन में भाग लेंगे, योगदान देंगे, एक दूसरे के साथ मिलकर काम करेंगे, अपने आप कई चीजें करके देखेंगे और केवल आपके द्वारा दिए गए एक्सप्लेनेशन पर हर समय निर्भर नहीं रहेंगे।
5. छात्रों को **पाठ्य पुस्तकों व अन्य लर्निंग मटीरीयल के फीचर्स से परिचय** कराइए। उन्हें बताइए कि आप किस तरह पढ़ाने जा रहे हैं और इन फीचर्स का उपयोग कैसे करेंगे, और उनके संबंध में बच्चों की भूमिका क्या होगी।
6. बच्चों के साथ **विषय के व्यापक लक्ष्यों के बारे में चर्चा करें**, इस प्रकार की भाषा में जिसे वे समझ सकें। यह बात करें कि वह क्यों आगे के लिए जरूरी हैं और कैसे आप उन्हें हासिल करने की दिशा में काम करने जा रहे हैं।

7. यह सारी चर्चाएं हो जाने के बाद बच्चों को विश्वास में लें, यह बताएं कि शुरुआत का बिंदु जानने के लिए उनका स्तर पता करना जरूरी है जिसके लिए आप उनसे कुछ **बातचीत** करेंगे, कुछ **गतिविधिया** करेंगे और **छोटे-छोटे टेस्ट** लेंगे। इन सबको आयोजित करने के बारे में कुछ सुझाव दिए जा रहे हैं। अच्छा होगा आप कक्षा 1 से 3 तक के आकलन के लिए हिन्दी और गणित तथा कक्षा 4, 5 के आकलन के लिए हिन्दी, गणित, ईवीएस और अंग्रेजी के कुछ सवाल (मौखिक और लिखित परीक्षण हेतु) पहले से ही तैयार कर लें। **आधारशिला** से कक्षावार कुछ गतिविधियों की पहचान कर लें जो बच्चों के लिए रोचक और उनके स्तर को पता करने में मददगार हों।
    a. कक्षा 1 के बच्चों से कोई टेस्ट लेने की बजाय उनके घर परिवार के बारे में, उनकी पसंद-नापसंद, खेल-खिलौने के बारे में उनसे सुनें और यह अंदाजा लगाते रहें कि उनके साथ शिक्षण की शुरुआत कहाँ से और कैसे करना ठीक होगा।
    b. कक्षा 2 के बच्चों से कक्षा 1 में पढ़ी गयी पुस्तकों के बारे में बातचीत करें। पढ़ने-लिखने और संख्या ज्ञान संबंधी सवालों के माध्यम से उनके सीखने के वर्तमान स्तर का पता करें।
    c. कक्षा 3 के बच्चों से कक्षा 2 और 3 के लर्निंग आउटकम पर आधारित प्रश्नों के माध्यम से बातचीत करें, उनके वर्तमान स्तर की जांच करें।
    d. कक्षा 4 के बच्चों से कक्ष 3 और 4 के लर्निंग आउटकम से संबंधित प्रश्नों के जरिए बातचीत करें, उनके सीखने के स्तर का पता करें।
    e. कक्षा 5 के बच्चों से कक्षा 3, 4 और 5 के लर्निंग आउटकम से संबंधित प्रश्नों के जरिए बातचीत करें, उनके सीखने के स्तर का पता करें।
8. आकलन के आधार पर ये तीन निर्णय ले पाना हमें प्रभावशाली शिक्षक बनाता है। जहाँ भी हम आकलन से निकलने वाले डाटा का सोच समझकर प्रयोग करते हैं वहाँ पर हम सीखना सुनिश्चित करने में सफल हो पाते हैं।
    1. मेरे द्वारा की गई प्रक्रिया और प्रयास किस हद तक छात्रों तक पहुँचे हैं? इसके आधार पर मुझे आगे की योजना में क्या शामिल करना चाहिए?
    2. किन बिंदुओं पर पूरी कक्षा ही कमज़ोर नज़र आती है? किन बातों को थोड़े अलग तरीके से दोहराने की ज़रूरत है?
    3. किन बच्चों को कुछ विशेष मदद की ज़रूरत है? शिक्षण के दौरान किस प्रकार उन्हें थोड़ा अलग समय देकर मदद करूँ?
9. अब एक **पुनरावृत्ति का चरण** लागू करें जहां आप तेजी से बच्चों को आवश्यक पूर्व ज्ञान में कमियों को पूरा करने में मदद करते हैं। ऐसा करते समय कभी-कभी पाठ्य पुस्तक से उदाहरण दिखाएं। यह संबंध बैठाने से बच्चे उसे थोड़ा देखना शुरु करेंगे, उससे थोड़ा परिचित होने लगेंगे।
10. पहले **दो-चार सप्ताहों की अलग योजना** बनाएं। ध्यान रहे- इस समय आपका फोकस सीखने के प्रति बच्चों की सहभागिता बढ़ाने और उसके लिए उन्हें तैयार करने पर होनी चाहिए।

पाठ्यपुस्तकों व अन्य पाठ्यसामग्री (पुस्तकालय आदि) का परिचय

क्योंकि इस सत्र में अब कुछ माह ही शेष बचे हैं, इसलिए बच्चों को शुरुआत में ही कक्षावार उपयोग की जाने वाली पाठ्य-सामग्री (पाठ्यपुस्तकें, अभ्यास-पुस्तिकाएं, पुस्तकालय आदि) से परिचित करा देना उनके सीखने के प्रति आत्मविश्वास बढ़ाने में मदद करेगा। पर ध्यान रहे इस क्रिया में कहीं बच्चों को कोर्स पूरा करने के दबाव का

एहसास न हो। इसके लिए क्विज़ सबसे बढ़िया माध्यम है। पाठ्य-पुस्तकों और अभ्यास पुस्तिकाओं के परिचय के लिए किए जाने वाले क्विज़ के कुछ सवाल नमूने के तौर पर दिए जा रहे हैं;

1. भाषा की पाठ्यपुस्तक में कुल कितने पृष्ठ हैं?
2. गणित की पाठ्यपुस्तक कितने पेज की है?
3. भाषा की पाठ्यपुस्तक में कुल कितनी कविताएं हैं?
4. भाषा की पाठ्यपुस्तक में कुल कितनी कहानियाँ हैं?
5. पाठ्यपुस्तक में कुल कितने पाठ हैं?
6. अभ्यास-पुस्तिका के किस पेज पर चित्र बनाने के लिए कहा गया है?
7. पाठ्यपुस्तक में संकलित पाठों में सबसे लंबा पाठ कौन सा है?
8. पाठ्यपुस्तक में संकलित पाठों में कौन सा पाठ सबसे छोटा है?

ऐसे ही कुछ और सवाल बनाकर बच्चों से 2-3 दिन तक पाठ्यपुस्तकों और अन्य पाठ्य-सामग्री के परिचय संबंधी गतिविधियां कराएं।

इसी प्रकार पुस्तकालय के परिचय के लिए कुछ सवाल बनाकर पुस्तकालय का परिचय कराएं। पुस्तकालय की पुस्तकों को कक्षा की दीवारों पर रस्सियों के सहारे प्रदर्शित कर दें और उनसे कहें कि वे किताबों को देख लें। फिर उनसे कुछ सवालों पर बातचीत करें;

- किस किताब का कवर ज्यादा रंगीन है?
- कौन-कौन सी किताबें कविता वाली हैं?
- कौन सी किताबों में कहानियाँ हैं?
- किस किताब में सबसे अधिक चित्र होंगे?
- तुम्हें एक दिन में पढ़ना हो तो कौन-कौन सी किताबें पढ़ सकते हो?
- किस किताब के कवर का चित्र सबसे अच्छा लग रहा है?

इस छोटी सी क्रिया से ही आप पाएंगे कि बच्चे पुस्तकालय की किताबें पढ़ने के लिए उत्सुक हैं। यही तो चाहिए था। अब उनको उनकी पसंद की किताबें पढ़ने के लिए दें और ध्यान रहे पढ़ने के बाद उन किताबों के बारे में बातचीत और चर्चा करना बच्चों के सीखने की दृष्टि से जरूरी है।

गतिविधि आधारित कक्षा की ओर बढ़ें!

धीरे-धीरे एक **गतिविधि आधारित कक्षा** की ओर बढ़ें। अच्छा होगा कक्षा और स्तर के अनुसार पहले ही गतिविधियों का चयन **आधारशिला** या अन्य मॉड्यूल से कर लें।

- पहले मौखिक गतिविधियों को करें - यानी ऐसी गतिविधियां जिनके ERAC के E में मौखिक कार्य हों। देखें – आधारशिला में सुनने-बोलने संबंधी गतिविधियां।
- एक बार बच्चे बेझिझक अपने विचार व्यक्त करने के आदी हो जाएं तब आप दूसरे चरण में पढ़ने-लिखने संबंधित गतिविधियों की शुरुआत कर सकते हैं। देखें - आधारशिला में पढ़ने-लिखने संबंधी गतिविधियां।
- इसमें समूह में कार्य करना भी शामिल है। समूह कार्य के तरीकों में उन्हें अभ्यस्त कराएं। समूह कार्य की शुरुआत में बच्चों से कुछ रचने-बनाने संबंधी कार्य कराएं।

- अब आप कक्षा में सामग्री-आधारित गतिविधियों की शुरुआत करने के लिए तैयार हैं। शुरुआत में उनके साथ स्कूल में उपलब्ध विविध प्रकार के सीखने की सामग्री का परिचय और उनके उपयोग के तौर-तरीकों के बारे में बातचीत करें।

चरण 2 - पुनरावृत्ति चरण

बच्चे लगभग 11 माह के घर पर बिताएं हैं। इस दौरान वे जाने किन-किन मुश्किलों का सामना किए हैं। निश्चित रूप से वे इस अवधि में अपने घर के काम में हाथ बँटाए होंगे। हो सकता है, किसी बीमारी का शिकार हुए हों। हो सकता है उनके शैक्षिक प्रयासों में उन्हें घर में सहारा देने वाला कोई न हो। यह भी संभव है कि कुछ बच्चे इस अवधि में कापी-किताब से पूरी तरह से दूर रहे हों।

इसीलिए झुँझलाने से काम नहीं चलेगा! अगर हमारे बच्चे सीखने में सफल नहीं होते, तो हमें भी सफल नहीं माना जा सकेगा। इसीलिए थोड़ी सहानुभूति और थोड़ी रणनीति के सहारे हम बच्चों के सीखने में बहुत बड़ा अंतर ला सकेंगे।

प्रारंभिक चर्चा

- बच्चों से चर्चा करें, उन्हें बताएँ कि पहले की बातों को क्यों दोहराना ज़रूरी है।
- उनसे पूछें कि किस टॉपिक के बिंदु पर वे अपने आप को सबसे कमज़ोर महसूस करते हैं। उनके लिए सीधे-सीधे यह बताना कठिन हो सकता है...

एक प्रेरक उद्बोधन दें –
यह मुझे विश्वास है कि मेरे स्कूल का हर बच्चा इस साल अपनी ओर से सीखने की पूरी कोशिश कोशिश करेगा। अपनी कोशिश में तुम सफल हो सको इसके लिए ज़रूरी है कि....

मिलकर योजना बनाएं

अपनी अपेक्षाएँ साझा करें, छात्रों से पूछें कि उन्हें किस तरह की मदद चाहिए। यहाँ भी अनुभव नहीं होने की वजह से वे नहीं कह पाएँगे कि उन्हें किस तरह की मदद चाहिए। लेकिन आपके द्वारा यह पूछे जाने की वजह से उन्हें एहसास होगा कि ज़रूरत पड़ने पर सहारा मिलेगा और यह उन्हें प्रेरित भी करेगा ।

एक से अधिक समूहों के साथ काम करना

आपको पहले ही कुछ दिनों में यह दिख जाएगा कि बच्चों के स्तरों में इतना अंतर है कि पूरी कक्षा को एक साथ एक ही चीज़ पढ़ाना कठिन है। आप दो या तीन समूह बनाने के बारे में सोच सकते हैं। लेकिन यह तभी हो पाएगा जब हर समूह कम से कम कुछ देर के लिए आप की उपस्थिति के बिना काम कर सकता है।

- इसीलिए शुरुआत में एक ऐसे सामान्य या कॉमन उद्देश्य पर काम करें।
- जब बच्चे इस बिंदु पर पहुँच जाएँ जहाँ वे भी अपने आप कुछ काम कर रहे हैं, तब आप किसी एक समूह के पास जाकर उन्हें थोड़ा मुश्किल काम दे सकते हैं।
- और ऐसा ही तीसरे समूह के पास जाकर भी।
- हर समूह से हटने के पहले अगर उन्हें यह स्पष्ट होगा - उन्हें क्या काम करना है, तभी उस पर जुटे रहेंगे।

स्वभाविक है कि यह इतना आसान नहीं है, लेकिन इतना मुश्किल भी नहीं जितना कि सुनने में लग सकता है। क्योंकि बच्चे तो अपने घर-परिवार में विविध उम्र के साथियोमन के साथ खेलते हैं, अपनी पसंद के कार्य स्वभावतः करते रहते हैं।

पुनरावृत्ति चरण के दौरान आकलन

पुनरावृत्ति चरण के क्रियान्वयन के दौरान आकलन की विशेष भूमिका है। लेकिन इसके लिए बच्चों को विश्वास में लेना और आकलन के प्रति उनके भय को दूर करना जरूरी है।

- अगर आप अपनी योजना को छोटे-छोटे हिस्सों में देखें, और हर हिस्से में आकलन का समावेश करें, तो आपको बच्चों और अपनी प्रगति का अंदाज़ होता रहेगा।
- इस चरण में शिक्षण के दौरान स्वाभाविक रूप से होने वाले आकलन की प्रमुख भूमिका है क्योंकि यह आपका समय बचाएगा।
- हो सकता है कहीं कहीं आपको छोटे-छोटे टेस्ट करना उपयोगी लगे। इन्हें मौखिक रूप से करना व्यावहारिक होगा। इसमें भी अगर आप बच्चों की भूमिका को बढ़ा सकें तो यह आसान और प्रभावशाली हो जाएगा। इसके तरीके आगे दिए गए हैं।

और अंत में अपने स्तर को सुधारने में बच्चों की भूमिका को बढ़ाने के लिए आप उनको अपने स्तर के बारे में बेहतर जानकारी कैसे देंगे? और अपने में सुधार लाने के बारे में किस तरह की चर्चाएँ करेंगे?

चरण 3 – बच्चों को स्वयं सीखने के लिए तैयार करें!

गैप पूरे करने से जुड़ी सारी जिम्मेंदारियां शिक्षक अकेले पूरी नहीं कर सकते – इसलिये छात्रों को स्वायत्त बनने में मदद करें। आगे कुछ क्रियाकलापों के सुझाव दिए जा रहे हैं;

1. बच्चों की सृजनशीलता को प्रोत्साहित करें!

जिन प्रयासों को सृजनशीलता का दर्जा दिया जाता है उनमें दिखने वाले गुण कुछ इस प्रकार होते हैं -

- हम अलग-अलग विचारों, वस्तुओं, तरीकों या प्रक्रियाओं को जोड़कर कुछ नया बनाते हैं, या
- ऐसे विकल्प पैदा करते हैं जो आमतौर पर लोग नहीं सोच पाते, या
- कुछ नया आविष्कार करते हैं या
- कुछ नया ही बनाते हैं।

इस सूची को देखकर लगता है यह सब तो हमारे बच्चों के लिये असंभव होगा! लेकिन वास्तविकता यह है कि बच्चे शुरुआती दिनों से ऐसा करते ही रहते हैं। बहुत छोटे बच्चे हमेशा कुछ बना रहे होते हैं - बर्तनों या वस्तुओं को जमा कर, पत्तियों से या गीली मिट्टी से, या काग़ज़ या दीवार पर चित्रों में। उनसे थोड़े बड़े बच्चे खिलौने बनाते हुए दिखते हैं या सामान्य वस्तुओं को कल्पना के सहारे कुछ नए ही उपयोग में लाते हुए।

प्राथमिक स्तर पर भाषा शिक्षण के तहत नए वाक्य, कहानियाँ- कविताएँ रचना स्वभाविक रूप से शामिल हो सकता है। इसी तरह अगर गणित को देखें, तो उसमें परिवेश की चीजों के सहारे विवध प्रकार के पैटर्न और गणना की बात सहज रूप में की जा सकती है। और ईवीएस विषय के लिए उनके परिवेशीय अनुभव और ज्ञान को आधार बनाएं – विविध प्रकार के पेड़-पौधों, घरों की बनावट आदि कर बारे में चर्चा और रचने का कार्य उनसे कराए जा सकते हैं।

2. चिंतन और विश्लेषण की क्षमताएं बढ़ाएं!

जब छात्र थोड़ी मुखर हो जाएं (यानी उन में शिक्षक के सामने बोलने का डर दूर हो चुका हो !), तब आप उन्हें चिंतन और विश्लेषण के लिए प्रोत्साहित कर सकते हैं। अपने अनुभवों पर क्यों, कैसे और अगर से वाल प्रश्नों के माध्यम से। उदाहरण के लिए;

1. पिछले कुछ महीनों में आपने कौन से अलग-अलग कार्य किए? (साधारण स्मरण का अभ्यास)
2. इनमें से किस कार्य को सबसे अधिक समय के लिए किया? (सूची में से एक आधार पर तुलना करके किसी बिंदु को पहचानना)
3. आपने इस कार्य को क्यों किया? (कारणों के बारे में साधारण चिंतन)
4. क्या इसे इतना अधिक समय देने से आपको लाभ मिला? (नतीजों के आधार पर आकलन)
5. क्या आपने जितना सोचा था उससे उतना ही लाभ मिला? (अपेक्षाओं के सापेक्ष समीक्षा)
6. क्या यह इतना करने लायक था? (समग्र मूल्यांकन)
7. आपने जितने अलग-अलग कार्य किए उनमें सबसे महत्वपूर्ण कौन सा था? (प्राथमिकता या जो अपने लिए सबसे अधिक मूल्य रखता है उसकी पहचान)
8. क्या सबसे महत्वपूर्ण कार्य वही था, जिसे आपने सबसे अधिक समय दिया? (महत्व और मात्रा, मूल्य और बारंबारिता के बीच अंतर और संबंध को पहचानना)
9. अगर आगे ऐसे फिर कुछ दिन आते हैं जब स्कूल नहीं चलता है, तब आप क्या करना चाहेंगे? (चिंतन से उभर रही समझ को नई परिस्थिति में लागू करना)

3. निर्णय ले पाने की क्षमता को प्रोत्साहन दें!

आमतौर पर यह धारणा है कि निर्णय ले पाना बच्चों के लिए कुछ मुश्किल ही काम है और यह भी कि वे अधिकतर गलत विकल्प ही चुनते हैं! लेकिन देखें तो बच्चे दैनिक जीवन में निर्णय लेते ही रहते हैं। उदाहरण के लिए अगर दूर से पानी भरकर लाना है तो तय करते हैं कि कब और कैसे इसे किया जाए.... या जब साथियों के साथ खेल रहे हों तो परिस्थितियों के अनुसार तय करते हैं कि कौन से नियम लागू किए जाएँ.... या कभी-कभार उन्हें कहीं से कुछ पैसा मिला तो फिर उसे खर्च कैसे करें। इसलिए अगर उनके निर्णय ले पाने की क्षमता पर काम किया जाए तो जिन परिस्थितियों में वे पहले से ही निर्णय ले रहे हैं उन में उनको लाभ मिलेगा।

यह समझना उपयोगी होगा कि निर्णय लेना और समस्या सुलझाना दो अलग कौशल हैं। समस्या वह होती है जो पहले से है ही और हमें उसका हल ढूँढना है। लेकिन निर्णय लेना ऐसी परिस्थिति के बारे में है जो अभी आने वाली है और हम उसकी तैयारी कर रहे हैं। कई तरह के निर्णय तो बहुत तेज़ी से लिए जा सकते हैं और कुछ और में अधिक समय लगता है। लेकिन आमतौर पर निर्णय लेने के कुछ सरल चरण हैं जिन्हें आप बच्चों को आसानी से सिखा सकते हैं। वे हैं:

1. पहचानना कि क्या निर्णय लेना है।
2. अलग-अलग विकल्पों को देखना।
3. हर विकल्प के पक्ष में होने वाले बिंदु और उसकी कमज़ोरियों को देखना।
4. जहाँ उपयुक्त हो वहाँ विकल्पों को पहले आज़माना और फिर निर्णय लेना।
5. बाद में यह देखते रहना कि निर्णय ठीक निकला या नहीं, ताकि अगली बार बेहतर निर्णय ले सकें।

इस प्रक्रिया को स्कूल में होने वाली साधारण क्रियाओं पर भी लागू किया जा सकता है - जैसे कि, एक नोटिस बोर्ड जिस पर छात्रों की रचनाओं को प्रदर्शित किया जाएगा - क्या क्या शामिल किया जाए, कैसे प्रस्तुत और

प्रदर्शित किया जाए, कब बदला जाए?

विषय के शिक्षण में भी इस प्रक्रिया का उपयोग किया जा सकता है। उदाहरण के लिए, अगर पूरे स्कूल को कहीं घूमने के लिए ₹5000 मिलते हैं, तो कहाँ जाना ठीक होगा? हमारे क्षेत्र के लिए क्या बेहतर होगा - क्लीनिक, या पार्क या बेहतर सड़क? हमारे सीमित संसाधनों में कुपोषण से बचने के लिए सबसे बेहतर उपाय कौन से हैं?

3. अध्ययन कौशल का विकास करें ताकि वे स्वाध्याय कर सकें!

- अपने समय का आयोजन: लक्ष्य तय करें, बड़े काम को छोटे-छोटे हिस्सों में करें, नियमित करें ना कि एक बार में बहुत सारा, पढ़ाई करने की जगह को व्यवस्थित रखें।
- पढ़ना और समझना: कुछ दिन सरल पाठ वस्तु पढ़कर पढ़ने की आदत डालना, बड़ी सामग्री में महत्वपूर्ण जानकारी पहचानना, उसे अपने शब्दों में कहना, उस पर एक दूसरे के लिए प्रश्न बनाना, जो समझ में ना आए शिक्षक से पूछना।
- नोट लेना: नकल नहीं उतारना, अपने शब्दों में ऐसे लिखना कि पढ़कर पूरी बात दोबारा याद आ जाए।
- अभ्यासों के प्रकारों को समझना और उन की प्रैक्टिस करना।

4. अकादमिक प्रवीणता के लिए आवश्यक भाषा को बेहतर करें!

एक कौशलों का समूह जिसका अभाव बच्चों के सीखने में बाधक बनता है, वे हैं - भाषा जुड़े कौशल (सुनना, बोलना, पढ़ना और लिखना)। हो सकता है कुछ बच्चे शिक्षक की भाषा को सुनकर पूरी तरह समझ न पा रहे हों (क्योंकि उनकी घरेलू भाषा स्कूली भाषा से अलग है या उसमें उपयोग किए जा रहे शब्द उनके लिए कठिन है)। या वे व्यक्त ना कर पा रहे हों कि उन्हें क्या समझ में नहीं आ रहा है (इसके लिए उन्हें आत्मविश्वास या डर का अभाव, और भाषा - दोनों चाहिए)। कभी-कभी उनके लिए निर्देशों की श्रृंखला का पालन करना मुश्किल हो सकता है (यह बड़ों के लिए भी कई बार होता है)।

हर विषय में कुछ शब्द या वाक्यांश सभी के लिए समझने में कठिन होते हैं। इसके अलावा हर विषय में अकादमिक प्रवीणता के लिए भाषा का एक अपेक्षित स्तर होता है। यह नहीं हो पाने पर भी विषय की समझ अधूरी रह सकती है।

तो कक्षा में चल रही प्रक्रियाओं के दौरान किस तरह आप बच्चों के भाषायी कौशल का विकास कर सकते हैं? देखिए कुछ सुझाव।

- ऐसे प्रश्न अधिक पूछें जो कि क्यों, कैसे और अगर से शुरू होते हैं। बच्चों को प्रोत्साहित करें कि इन प्रश्नों के जवाब में वे केवल पाठ्यपुस्तक में दी गई बातों को दोहराएँ नहीं, बल्कि अपने आप से सोच कर उत्तर दें।
- ऐसे क्विज करें या कक्षा के सामने प्रस्तुतिकरण के मौके दें, जहाँ बच्चों को अपने किए गए कार्य, या जो उन्होंने खोज कर पता किया है, या जो निष्कर्ष निकाले हैं, उन्हें प्रस्तुत करना है।
- कभी कभार कुछ देर के लिए ब्लैक बोर्ड पर निर्देश लिख कर ही काम करें। जैसे, लिखिए - "अपनी पुस्तक खोलो पृष्ठ क्रमांक __पर। इसमें प्रश्न क्रमांक____ का, बोल कर उत्तर दो " जब बच्चे थोड़ा काम कर लें, फिर लिखिए - "बहुत अच्छे" या "इस उत्तर में कुछ कमी रह गई है, कौन इसमें जोड़ेगा?" इत्यादि।

5. बच्चों को स्व-आकलन के लिए प्रेरित करें!

बच्चों को आकलन की प्रक्रिया में जोड़ने के लिए उन्हें तैयार करना ज़रूरी है। यहाँ पर हम यह मानकर चल रहे हैं कि वे आपसे सहज रूप से बात कर सकते हैं - यानी आप से घबराते नहीं हैं। उन्हें तैयार करने के चरण इस प्रकार है -

- चरण 1 - अपनी ओर से कुछ उदाहरण देकर समझाना की किस तरह प्रश्न बनाए जाते हैं।
- चरण 2 - छात्रों को प्रश्नों के प्रकारों के बारे में बताना - किस तरह इन्हें बनाया जाता है, और कैसे इनका उत्तर दिया जाता है।
- चरण 3 - छात्रों को अपने आप से आकलन के प्रश्न बनाने का अभ्यास देना जिसमें आप उन्हें मदद कर रहे हों और फीडबैक भी दे रहे हों।
- चरण 4 - अब उन्हें समझाएँ कि अपने साथी के उत्तर पर किस तरह फीडबैक देना चाहिए - अगर अधूरा है तो बताएँ कि क्या छूट गया था, अगर गलत है तो इंगित करें कि क्यों गलत है और सही उत्तर क्या है।

निर्णय लेने के तनाव से बचें

शिक्षकों के कार्य में कमियाँ निकालना तो बहुत आसान है - लेकिन उसकी स्थिति में अपने आप को डालकर सोचना इतना आसान नहीं। शिक्षण के दौरान शिक्षक को सेकंडों में कितने सारे निर्णय लेने होते हैं - जो हुआ उसे रोकें या बढ़ाएँ, किसी की मदद करें या कोई प्रश्न पूछें, सामग्री का प्रयोग करें या व्याख्या करें, सावधानी बरतें या बच्चों को खुला छोड़ें, मौखिक अभिव्यक्ति के मौके दें या लिखने के लिए कहें, एक दूसरे के साथ काम करने के लिए छोड़ें या व्यक्तिगत काम दें.... दरअसल, जब भी कोई नयी शिक्षण विधि का प्रयोग हम करते हैं तो इतने सारे निर्णय एक साथ लेने की कठिनाई की वजह से हम क्रियान्वयन को बहुत मुश्किल पाते हैं और फिर छोड़ देते हैं। इस सब के पीछे का कारण है निर्णय लेने का तनाव। यह मानसिक दबाव कई बार हमें अपने अच्छे प्रदर्शन तक पहुँचने से रोकता है।

योजना बनाकर कार्य करने और कुछ प्रकार के पैटर्न का पालन करके हम बहुत सारे निर्णय बिना तनाव के तेज़ी से ले सकते हैं। इस तरह शांत भाव से निर्णय ले पाना केवल हमारे लिए ही नहीं बल्कि छात्रों के लिए भी बहुत उपयोगी है। जहाँ भी संभव हो उन्हें निर्णय लेने के मौके दीजिए - और बाद में इस पर बात भी करिए कि उन्होंने निर्णय कैसे लिए। इसी संदर्भ में योजनाबद्ध तरीके से काम करने के लाभ के बारे में भी आप उनसे बात कर सकते हैं।

गतिविधियां, बच्चों के लिए उपयोगी सामग्री और अतिरिक्त जानकारी आप पाएंगे;
www.mananbooks.in और www.chachi.app में।